Dr Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

UNIT – III
यूरोप में आर्थिक विकास

कार्ल मार्क्स का आर्थिक चिंतन : पूँजीवाद की आलोचना और वर्ग संघर्ष

कार्ल मार्क्स यूरोप के आर्थिक विकास की आलोचनात्मक व्याख्या करने वाले सबसे प्रभावशाली विचारक थे। उन्होंने पूँजीवाद को एक ऐतिहासिक व्यवस्था माना, न कि एक स्थायी या प्राकृतिक प्रणाली। मार्क्स का मानना था कि प्रत्येक आर्थिक व्यवस्था अपने भीतर ऐसे अंतर्विरोध पैदा करती है, जो अंततः उसके पतन का कारण बनते हैं।

मार्क्स के अनुसार पूँजीवादी व्यवस्था में उत्पादन के साधनों—भूमि, मशीनें, कारखाने—पर पूँजीपति वर्ग का नियंत्रण होता है। श्रमिक वर्ग के पास केवल अपनी श्रम-शक्ति होती है, जिसे वह जीवित रहने के लिए बेचता है। श्रमिक जितना मूल्य उत्पादन करता है, उसका पूरा प्रतिफल उसे नहीं मिलता। उत्पादन और मजदूरी के बीच का अंतर ही अधिशेष मूल्य कहलाता है, जिसे पूँजीपति हड़प लेते हैं।

मार्क्स ने इस शोषण को पूँजीवाद का मूल आधार बताया। उन्होंने कहा कि पूँजीवाद में आर्थिक संबंध केवल बाजार के माध्यम से नहीं, बल्कि शक्ति और नियंत्रण के माध्यम से संचालित होते हैं। पूँजीपति लाभ को अधिकतम करने के लिए मजदूरी कम रखते हैं, कार्य समय बढ़ाते हैं और श्रमिकों का शोषण करते हैं।

मार्क्स ने इतिहास को वर्ग संघर्ष की प्रक्रिया के रूप में समझाया। सामंती व्यवस्था में सामंत और किसान के बीच संघर्ष था, जबकि पूँजीवाद में यह संघर्ष पूँजीपति और सर्वहारा के बीच होता है। मार्क्स का विश्वास था कि यह संघर्ष अंततः पूँजीवाद के पतन और समाजवादी

व्यवस्था की स्थापना की ओर ले जाएगा, जहाँ उत्पादन के साधनों पर सामूहिक स्वामित्व होगा।

औद्योगिक क्रांति : यूरोपीय आर्थिक विकास की चरम अवस्था

औद्योगिक क्रांति यूरोप के आर्थिक विकास की सबसे निर्णायक और परिवर्तनकारी घटना थी। यह क्रांति 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इंग्लैंड में प्रारंभ हुई और धीरे-धीरे पूरे यूरोप में फैल गई। औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन की पद्धति, श्रम संरचना, सामाजिक संगठन और आर्थिक संबंधों को पूरी तरह बदल दिया।

औद्योगिक क्रांति के प्रमुख कारणों में पूँजी की उपलब्धता, तकनीकी आविष्कार, श्रम-शक्ति की प्रचुरता और बाज़ार की बढ़ती माँग शामिल थे। भाप इंजन, कताई मशीन, करघा और लौह उद्योग में हुए नवाचारों ने उत्पादन को कई गुना बढ़ा दिया। कारखानों में मशीनों के प्रयोग से वस्तुओं का उत्पादन तेज़ और सस्ता हुआ।

इस क्रांति के परिणामस्वरूप कृषि आधारित अर्थव्यवस्था औद्योगिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गई। शहरों का विस्तार हुआ, श्रमिक वर्ग की संख्या बढ़ी और आधुनिक उद्योगों का विकास हुआ। परिवहन में रेलवे और स्टीमशिप के आगमन ने व्यापार को वैश्विक स्तर पर पहुँचा दिया।

हालाँकि औद्योगिक क्रांति ने यूरोप को आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनाया, लेकिन इसके सामाजिक परिणाम अत्यंत जटिल थे। श्रमिकों की कार्य स्थितियाँ अत्यंत दयनीय थीं। बाल श्रम, लंबा कार्य समय, कम मजदूरी और अस्वास्थ्यकर जीवन परिस्थितियाँ आम थीं। इसके बावजूद, औद्योगिक क्रांति ने आधुनिक यूरोप की आर्थिक नींव रखी और वैश्विक आर्थिक व्यवस्था को आकार दिया।